कविता

कविता होती सकारत्मक सोच और सच की आवाज है
कविता हिंदी साहित्य की अनमोल धरोवर और साज है।

कविता होती,भोर बेला की वो स्वच्छ सुहानी ऊर्जा है
जिससे सदा स्वस्थ,हता है,हमारे शरीर का हर पुर्जा है।।

इसमें होती आयरन,कैल्शियम आक्सीजन की भरमार है।
जिसे सूनने वाला रहता स्वस्थ,नहीं होता कभी बीमार है।।

इसमें उगते हुये सूरज,से हर दिन नई उम्मीद,गुलज़ार है।
चहचहाती चिडियों के शोर में होता बचपन का सार है।।

इसमें होती नदी की धारा जैसे आगे चलने की पुकार है।
कविता है जिसमे मन्ज़िल को रहता राही का इंतजार है।।

कविता में होता हँसता खिलता प्रेम से सम्पूर्ण परिवार है।
जिसमे संस्कार,सम्मान,जज़्बात व आदर की भरमार है।।

कविता में करुणा,श्रृंगार,वियोग और वीर रस का सार है।
कविता हिंदी सहित्य का चमकता अदभुत स्वर्ण,श्रृंगार है।।

इस मे होता देने की चाह,सर्वधर्म समभाव की भरमार है।
मिट्टी से जुड़ कर,ज़मी पर खिलने में ही मिलता प्यार है।।

कविता वो आकर्षक पुष्प है जिस पर भौरों की भरमार है।
कविता ढूढता पत्थर में विश्वाश,शंकर भक्ति और संसार है।

कविता भाव का समंदर ,इसमें बहती नैया बिन पतवार है।
कविता ही है,जिसके गागर में सागर जितना भाव भंडार है।।

वो कविता ही है जिसे कवियो संग पूरब करता बेहद प्यार है।
तभी कवियों पर होती श्रोताओं के आशीर्वाद की भरमार है।।

कुन्दन वर्मा "पूरब"

(गोरखपुर)